

**Download CBSE  
Board Class 10  
Hindi A  
Topper Answer  
Sheet  
2015  
For Free**

**Think90plus.com**

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली  
माध्यमिक स्कूल परीक्षा (कक्षा दसवीं)  
परीक्षार्थी प्रवेश-पत्र के अनुसार भरें

विषय Subject :	HINDI COURSE - A							
विषय कोड Subject Code :	002							
परीक्षा का दिन एवं तिथि Day & Date of the Examination :	Thursday/12.03.15							
उत्तर देने का माध्यम Medium of answering the paper :	HINDI							
प्रश्न पत्र के ऊपर लिखें कोड को दर्शाए : Write code No. as written on the top of the question paper :	Code Number 3/1	Set Number ● ② ③ ④						
अतिरिक्त उत्तर-पुस्तिका (ओं) की संख्या No. of supplementary answer-book(s) used								
विकलांग व्यक्ति : Person with Disabilities :	हाँ / नहीं Yes / No	NO						
किसी शारीरिक अक्षमता से प्रभावित हो तो संबंधित वर्ग में ✓ का निशान लगाएं। If physically challenged, tick the category								
<table><tr><td>B</td><td>D</td><td>H</td><td>S</td><td>C</td><td>A</td></tr></table>			B	D	H	S	C	A
B	D	H	S	C	A			
B = दृष्टिहीन, D = मूक व बधिर, H = शारीरिक रूप से विकलांग, S = स्पास्टिक C = डिस्लेक्सिक, A = ऑटिस्टिक B = Visually Impaired, D = Hearing Impaired, H = Physically Challenged S = Spastic, C = Dyslexic, A = Autistic								
क्या लेखन - लिपिक उपलब्ध करवाया गया : Whether writer provided :	हाँ / नहीं Yes / No	NO						
यदि दृष्टिहीन हैं तो उपयोग में लाए गये सॉफ्टवेयर का नाम : If Visually challenged, name of software used :								

\*एक खाने में एक अक्षर लिखें। नाम के प्रत्येक भाग के बीच एक खाना रिक्त छोड़ दें। यदि परीक्षार्थी का नाम 24 अक्षरों से अधिक है, तो केवल नाम के प्रथम 24 अक्षर ही लिखें।  
Each letter be written in one box and one box be left blank between each part of the name. In case Candidate's Name exceeds 24 letters, write first 24 letters.

7502782  
002/50014

कार्यालय उपयोग के लिए  
Space for office use

खण्ड - क

i) ग) भारत की स्थिति अन्य देशों के मुकाबले अच्छी है।

ii) क) लड़कियों का विवाह कच्ची उम्र में करवा देना

iii) ख) बच्चों की सेहत, शिक्षा, सुरक्षा आदि के कानून बने

iv) घ) विद्यालय और घर पर भी पिटाई होती है

v) क) वंचित बचपन

vi) ख) आत्मनिर्भर बने के लिए जरूरी था

vii) क) आज़ादी के प्रति समर्पित लोगों का समूह तैयार करने के लिए

viii) ख) कोई भी काम छोटा या बड़ा नहीं, सभी पेशे एक-समान हैं

ix) ख) मर्यादाओं और मानव-मूल्यों का

3. v) क) देशशक्ति का ✓

i) ख) ऊँच-नीच और असमानता

ii) भाग्य पर नहीं कर्म पर विश्वास करना चाहिए → (क)

iii) ग) तू अखंड बंडर शक्ति का ; जाग , और निद्रा - सम्मोहित

iv) घ) दुर्धनवर के प्रति आवाज उठानी चाहिए ✓

v) क) जब गरीबी, भ्रष्ट और लाचारी पर क्रोध नहीं आता

4. i) ग) प्राकृतिक आपदा ✓

ii) ग) कोई हेलीकॉप्टर ऊँचे बचाने क्षमता पर आएगा

iii) घ) जम्मू और कश्मीर चाँद और कूल जैसा सुंदर है

iv) क) दूसरो को बचाने के कार्य में जुटी है ✓



ग) ख) पूरे शहर में पानी भर गया है।

खण्ड - ख

5. क) मिश्र वाक्य

ख) जैसे ही आँले पड़ने लगे, वैसे ही मैं बाहर जाकर ऊँचे देखने लगा।

ग) नवाब साहब ने कुछ देर गाड़ी की खिड़की के बाहर देखा और स्थिति पर गौर करते रहे।

6. क) सभी दर्शकों द्वारा नाटक की प्रशंसा की गई।

ख) प्रेमचंद्र ने जोदान लिखा।

ग) उससे अब भी बैठा नहीं जा सकता।

घ) इन प्रचुरों में शायद कैसे सोए? X X

2. i) बालगोबिन आगत की - संज्ञा, व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, संबंध कर्मक, "देखा गया" क्रिया से संबंध

ii) इस - विशेषण, सार्वनामिक विशेषण, पुल्लिंग, एकवचन, विशेष्य - दिन

iii) जब - संबंधबोध्यन योजक

"बालगोबिन आगत की संगीत-साधना का चरम ऊर्ध्व उस दिन देखा गया" और "उनका बेटा मरा" वाक्यों को जोड़ता है। उनमें संबंध बनता है।

iv) मरा - क्रिया, अकर्मक क्रिया, भूतकाल, कर्तृ वाच्य, ~~वाच्य~~ ~~वाच्य~~

उ.को. i) शीघ्र रस

ii) भयानक रस

iii) हस्य रस

ख) वीर रस का स्थायी भाव "उत्साह" है।

## खण्ड ग

9. क) मन्नू भंडारी के पिता की गिरती आर्थिक स्थिति का उन पर कमि असर पड़ा। उनके पिता अपने बच्चों पर ज्यादा क्रोध करने लगे। ज्यादा शक्की मिजाज के हो गए। लेखिका को अहसास होता है कि उनके पिता अपने बच्चों से भी अपनी लपटा नहीं बांटते।

ख) पहले इन्हें में उनकी आर्थिक स्थिति जरूर अच्छी रही होगी। तभी लेखिका ने गद्यांश में नवाबी आदतों का जिक्र किया है। उन्हें किसी भी चीज की कमी नहीं रही होगी।

ग) मन्नू के पिता का स्वभाव शक्की हो गया था क्योंकि उनके अपने ने उनके साथ विश्वासघात किया था।

10. क) लेखक नाटकों में स्त्रियों की भाषा प्राकृत होने की उनकी अधिका का प्रमाण नहीं मानता। उसने इसके विरुद्ध निम्नलिखित तर्क दिए हैं:  
 → उस जमाने में प्राकृत ही प्रचलित भाषा रही होगी। इसलिए वह प्राकृत से बोलती होगी।



→ जब उस जमाने के पुरुष प्राकृत बोलते हैं तो उन्हें अशिक्षित होने का प्रमाण क्यों नहीं माना जाता।

ख) स्त्री शिक्षा के विरोधी निम्नलिखित तर्क देते हैं :

→ अगर स्त्रियाँ शिक्षित हुई, तो समाज में उनका व्यवहार बहुत बुरा हो जाएगा।  
→ प्राचीन काल में भी देखा गया है कि शकुंतला शिक्षित थी, इसलिए उसने दुर्योधन से कटु वचन बोले थे।  
देवी सीता ने भी श्री राम से कटु वचन शिक्षित होने के कारण बोले थे।

ग) इस दुनिया में बहुत सारे लोग हैं जो स्त्री शिक्षा के विरोधी हैं। ऐसे समाज में भी स्त्रियों के प्रति ऐसी खली सोच रखना उनके खुल्ले विचारों का प्रतीक है।  
उनमें इतनी हिम्मत थी कि वे प्राचीन काल से यही आ रही सोच को खंडन कर सके।

घ) बिश्मिल्ला खां जीवन भर ईश्वर से यही मांगते रहे कि उनका सुरक्षी न बिगड़े।

वह जानते थे कि उनकी इस समाज में भी इज्जत है, वह उनकी सुरीली शहनाई की धुन की बख्शत हैं। अगर उनका सुर बिगड़ा तो उनकी इज्जत



नहीं रहेगी। इसलिए वह दिखावे का कोई मोल नहीं रखते थे।  
इससे पता चलता है कि वह कितने सरल स्वभाव के थे और वास्तविकता में विश्वास रखते थे।

ड.) काशी में हो रहे निम्नलिखित परिवर्तन उनके व्यक्ति कर रहे थे:

- अब वहां कला की उतनी कदर नहीं होती जितनी पहले हुआ करती थी।
- अब वहां ऐसी दुकानें जैसे कचोड़ियों की, मलाई बरफ आदि मिल रही थी।
- अब वहां प्राचीन काल के लोक गीत शैलियां जैसे झुमरी, चैती आदि का कोई जिक्र भी नहीं करता था।

II. क) 'शरभ जैसा' मुख्य गायक की बिगड़ते हुए सुर की टूटी आवाज के लिए प्रयुक्त हुआ है।

जब गायक सुर से दूर जाने लगता है और उसकी आवाज बिखरने लगती है तक ऐसा प्रतीत होता है कि शरभ जैसा कुछ गिर रहा है उसकी आवाज में।

ख) जब मुख्य गायक गाने के ऊंची लेंथो में खो जाता है और उसका गला बैठने लगता है तब उसकी प्रेरणा भी साथ छोड़ देती है।  
गाने में वह असाहज जैसी गुम हो जाता है।

ग) "इसका" मुख्य गायक के लिए प्रयुक्त हुआ है।

12. क) जब कोई चीज वास्तव में नहीं होती लेकिन हमें उसकी होने की अनुभूती होती है, उसे मृगतृष्णा कहते हैं। ज्यादातर इसे शैमिस्तान में देखा जाता है जब पानी के होने की अनुभूती होती है।

कविता में इसका प्रयोग जीवन में आने वाले अलक्षितों और बड़े बनने की चाह के लिए हुआ है।

जीवन में कभी कोई संतुष्ट नहीं रहा है। उसे जितना मिलता है, उसे हमेशा उससे ज्यादा की उम्मीद होती है।

ख) इस पंक्ति का भाव है कि जब सुख आने का अवसर होता है, अगर वह उस समय न आए और बाद में आए, तो उसका कोई मौल नहीं करता।

ग) 'कन्यादान' कविता में जिस लड़की की शादी हो रही थी, उसे कुछ बाँचना नहीं आता था।

वह अभी भी बहुत सरल और सीधी थी। उसे सुख की कल्पना थी, लेकिन जीवन में आने वाले दुखों की नहीं थी।

घ) 'कन्यादान' कविता की माँ परंपरागत माँ से भिन्न थी क्योंकि वह अपनी बेटी को सिखा रहे थी थी कि अगर उसके साथ शोषण हो तो वह उसका विरोध करे।

आमतौर पर माँ अपनी बेटी को समुशल दलने के लिए कहती हैं लेकिन इन्होंने इसके विपरीत उसे सारे काम कुशलता से करने को कहा पर किसी के आगे कमजोर होने को नहीं कहा। उसे हमेशा निडर रहने की सलाह दी।

ड) माँ की सीख में समुशल में हो रहे शोषण की तरफ संकेत किया गया है। किस प्रकार बहुओं के प्रति ज्यादती में जाती हैं। उन्हें कितना सहन करना पड़ता है।

क) देश की सीमा पर बैठे हमारे रक्षा कर रहे हमारी हमारे सैनिक भाईयों और बहनों ने हमारे सुख के लिए बहुत सारी कुर्बानियाँ दी हैं। अपने घर-परिवार से कौसों दूर, भारतीय सीमा पर आम नागरिकों की रक्षा करना, यह कोई आसान बात नहीं है। वहाँ पे वातावरण हमेशा सुरक्षित नहीं होगा। कभी भी गोली बारी हो सकती है। ऐसे माहौल में वह अपना सारा जीवन बिताते हैं।



उनके परिवार को उनका साथ - सिर्फ साल के कुछ दिनों के लिए मिलता है।

कभी - कभी कुछ सैनिक अपनी जान भी गवा देते हैं हमारी सुरक्षा के लिए ऐसे जावान सिपाहियों से हमें बहुत कुछ सीखने की मिलता है। इनसे हमें जीवन मूल्यों रखने वाले असर लोगों का आह्वान मिलता है। जैसे :

- दूसरों की खुशी के लिए अपनी खुशी दांव पर लगाना।
  - अपने देश के लिए मर मिटना।
  - दूसरों की सहायता और सुरक्षा के लिए हर वक्त खपिर रहना।
- ऐसे जावान सिपाहियों को हमारा शलाम....

खण्ड - द्वा

### विदेशों के प्रति बढ़ता मोह

यह कोई नई बात नहीं की लोगों को विदेश जाने का बहुत शौक है। वहां के चाल - दाल में खुद को दाल लेना। ऐसे बहुत से आह्वान हैं जिसमें लोग अपने देश को छोड़कर दूसरे देश में बस जाते हैं।

परंतु कोई यह नहीं सोचता की आगे बढ़ने के दौर में हम अपनी प्राचीन संस्कृति को खोते जा रहे हैं। अपने के मूल्यों को भूलते जा रहे हैं।



ऐसा बहुत सुनने को मिलता है कि लोग दूसरे देश काम के मिलसिले में जा रहे हैं। उनका कहना है कि उन्हें अपने देश में वह मौका नहीं मिलता जिससे वह अपने आप को साबित कर सकें।

यह कहना पूरी तरह से गलत भी नहीं होगा कि विदेश में अपने आप को साबित करने के लिए सारे मौके होते हैं। वहाँ पे लोगों की कमाई ज्यादा होती है जिससे लोग अपना जीवन हर सुविधा का लुफ्त उठाते हुए व्यतीत कर सकते हैं। पूरे परिवार के लिए यह बहुत लाभकारी है। बच्चों के लिए अच्छे स्कूल, बूढ़ों के लिए अच्छे अस्पताल और अच्छा इलाज। सब कुछ वहाँ बहुत अच्छा है जो सबको आकर्षित करता है। विदेश में रहने से लोगों के रहन-सहन में परिवर्तन आता है जिससे उनके जीवन जीने का अलग तरीका बन जाता है।

लोगों को यह बदलाव बहुत अच्छा लगता है।

जो लोग अपने देश में रहते हैं, उन्हें इन लोगों को सुखी देखकर और आकर्षित होता है वहाँ जाने की चाह और बढ़ जाती है। पर विदेश में रहने में सिर्फ सुख ही नहीं होता। विभिन्न परेशानियों का भी सामना करना पड़ता है। अगर किसी को वहाँ पे कारोबार स्थापित करना हो, तो उसे बहुत परेशान करना पड़ता है। वहाँ रहना बहुत मुश्किल भी है। वहाँ पे लोगों के पास पैसा ज्यादा होता है तो खर्चा भी ज्यादा होता है। हर चीज का दाम भी बहुत ज्यादा होता है।

13

पर चाहे कोई विदेश में कितना भी सुखी रह ले, अपना देश अपना ही होता है।

" चाहे धूमो उत्तर-दक्षिण,

चाहे धूमो पूरव-पश्चिम,

इस सोन चिरैया का कोई मुकाबला नहीं। "

असल सुख अपने भारत देश में ही है।

भारत माता कि छांव में हमें जो सुरक्षा मिलती है, वह दूसरे किसी देश में नहीं मिल सकती।

पत्र लेखन

15.

नं 5, सुनहरी कोलनी,  
प्रताप नगर,  
नई दिल्ली - 110052

दिनांक - 12.03/15

प्रिय मित्र सुरेश,

स्नेह !

कैसे हो ? आशा करती हूँ खुश होंगे। यहाँ पे भी सब कुशल है।  
परिक्षाएँ बस खतम हुई हैं। नए साल और नई साल की तैयारी चल रही है। तुम्हारी  
भी परिक्षाएँ खत्म हो चुकी होंगी।

एक दिन मुझे तुम्हारा एक दोस्त मिला था और बातों-सी-बातों में मुझे पता चला  
की हाल ही में तुम्हारी अपने किसी दोस्त से लड़ाई हुई जिसमें गलती तुम्हारी  
थी। देखो दोस्त ! लड़ाई-झगड़ा तो दोस्ती की पहचान होती है। हम दोनों में  
ही कितनी लड़ाईयाँ हुई हैं। कभी भी किसी की झगड़े की शक्ल मत बदलना  
की सुलह करनी मुश्किल हो जाए। अगर गलती तुम्हारी है तो माफी मांगनी  
में भी मत हिचकिचाया।



आशा करती हूँ की तुम्हें मेरी बात समझ आदि होगी। अब जल्दी से इस  
दोस्त से मुलाह कर मोजे करो।

तुम्हारी दोस्त,  
क. ख. ग.

16

सार लेखन :

शीर्षक - मधुर वचन

मधुर वचन सुनकर सबका हृदय प्रसन्न हो जाता है। मधुर वचन मीठी औषधि के  
समान लगते हैं तो कड़वे वचन तीर के समान चुभते हैं। मधुर वचन न केवल  
सुननेवाले अपितु बोलनेवाले को भी आत्मिक शांति प्रदान करते हैं। जो व्यक्ति अपनी  
वाणी का दुरुपयोग करते हैं, उन्हें संसार में अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा खोनी पड़ती है।  
यदि दुर्वचन समाज में ईर्ष्या, द्वेष, लड़ाई आदि दुर्गुणों को जन्म देते हैं। मधुर वचन संसार में प्रेम, आर्चिष्ट  
तथा सुखों का संचार करते हैं। मानव को संसार की सुख-शांति के लिए वाणी को सदा  
सदुपयोग करना चाहिए।